महामना मालवीयः

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **संस्कृत-भाग** के **'महामना मालवीयः'** नामक शीर्षक से अवतरित है।

- **महामनस्विनः मदनमोहनमालवीयस्य जन्म प्रयागे प्रतिष्ठित-परिवारेऽभवत।**
  महामना मदनमोहन मालवीय का जन्म प्रयाग के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था।
- **अस्य पिता पण्डितव्रजनाथमालवीयः संस्कृतस्य सम्मान्यः विद्वान् आसीत्।**
  इनके पिता पं० ब्रजनाथ मालवीय संस्कृत के सम्माननीय विद्वान् थे।
- **अयं प्रयागे एव संस्कृतपाठशालायां राजकीयविद्यालये म्योर-सेण्ट्रल महाविद्यालये च शिक्षा प्राप्य अत्रैव राजकीय विद्यालये अध्यापनम् आरब्धवान्।**
  इन्होने प्रयाग में ही संस्कृत पाठशाला, राजकीय विद्यालय और म्योर सेण्ट्रल महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर वहीं राजकीय विद्यालय में अध्यापन-कार्य प्रारम्भ किया।
- **युवकः मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्णभाषणेन जनानां मनांसि अमोहयत्।**
  युवक मालवीय ने अपने ओजस्वी भाषण से लोगों के मन को मोह लिया।
- **अतः अस्य सुहृदः तं प्राड्विवाकपदवी प्राप्य देशस्य श्रेष्ठतरां सेवां कर्तुं प्रेरितवन्तः।**
  अतः इनके मित्रों ने इन्हें अधिवक्ता (वकील) की पदवी प्रदान कर देश को सर्वश्रेष्ठ सेवा करने के लिए प्रेरित किया।
- **तद्नुसारम् अयं विधिपरीक्षामुत्तीर्य प्रयागस्थे उच्चन्यायालये प्राड्विवाककर्म कर्तुमारभत्।**
  तदनुसार इन्होंने कानून की परीक्षा उत्तीर्ण कर, प्रयाग के उच्च न्यायालय में वकालत प्रारम्भ की।
- **विधेः प्रकष्टज्ञानेन, मधुरालापेन, उदारव्यवहारेण चायं शीघ्रमेव मित्राणां न्यायाधीशानाञ्च सम्मानभाजनमभवत्।**
  कानून के उत्तम ज्ञान, मधुर बातचीत तथा उदार व्यवहार के कारण शीघ्र ही वे मित्रो और न्यायाधीशों के सम्मान के पात्र बन गए।
- **महापुरुषाः लौकिक-प्रलोभनेषु बद्धाः नियतलक्ष्यान्न कदापि भ्रश्यन्ति।**
  महान् पुरुष सांसारिक प्रलोभनों में फंसकर निश्चित लक्ष्य से कभी विचलित नहीं होते हैं।
- **देशसेवानुरक्तोऽयं युवा उच्चन्यायालयस्य परिधौ स्थातुं नाशक्नोत्।**
  देशसेवा में अनुरक्त यह युवक (मालवीय) उच्च न्यायालय की सीमा में नहीं रह सका।
- **पण्डित मोतीलाल नेहरू-लालालाजपतरायप्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रतासङ्ग्रामेऽवतीर्णः।**
  पण्डित मोतीलाल नेहरू, लाजपतराय आदि अन्य राष्ट्रनायको के साथ वे भी देश के स्वतन्त्रता संग्राम में उतरे।
- **देहल्यां त्रयोविंशतितमे काङ्ग्रेसस्याधिवेशनेऽयम् अध्यक्षपदमलङ्कृतवान्।**
  दिल्ली में तेईसवे कांग्रेस-अधिवेशन में इन्होंने (कांग्रेस के) अध्यक्ष पद को सुशोभित किया।
- **रौलेट एक्ट' इत्याख्यस्य विरोधेऽस्य ओजस्विभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्लशासकाः भीताः जाताः।**
  'रौलेट एक्ट' नामक कानून के विरोध में इनके ओजस्वी भाषण सुनकर अंग्रेज शासक भयभीत हो गए।
- **बहुवारं कारागारे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरः देशसेवाव्रतं नात्यजत**
  अनेक बार जेल में जाने के बाद भी इस बीर ने देशसेवा के व्रत को नहीं छोड़ा।
- **हिन्दी-संस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत्।**
  इनका हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा पर समान अधिकार था।
- **हिन्दी-हिन्दु-हिन्दुस्थानानामुत्थानाय अयं निरन्तरं प्रयत्नमकरोत्।**
  हिन्दी हिन्दू और हिन्दुस्तान के उत्थान के लिए इन्होंने निरन्तर प्रयत्न किया।
- **शिक्षयैव देशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः**
  शिक्षा से ही देश और समाज में नवीन प्रकाश का उदय होता है अतः मालवीयजी ने
- **वाराणस्यां काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत्।**
  बनारस में 'काशी विश्वविद्यालय' की स्थापना की।
- **अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत् जनाश्च महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमदुः।**
  इसके निर्माण के लिए इन्होने लोगों से धन माँगा और लोगों ने इस महान् ज्ञान-यज्ञ में इन्हें बहुत-सा धन दिया,
- **तेन निर्मितोऽयं विशालः विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति।**
  उससे निर्मित यह विशाल विश्वविद्यालय भारतीयों की दानशीलता और मालवीयजी के यश की प्रतिकृति-सा सुशोभित हो रहा है।
- **साधारणस्थितिकोऽपि जनः महतोत्साहेन, मनस्वितया, पौरुषेण च**
  साधारण स्थिति वाला (व्यक्ति) भी महान् उत्साह, विचारशीलता और पुरुषार्थ से
- **असाधारणमपि कार्यं कर्तुं क्षमः। इत्यदर्शयत् मनीषिमूर्धन्यः मालवीयः।**

www.gyansindhuclasses.com

असाधारण कार्य भी कर सकता है। इस बात को विद्वानों ने श्रेष्ठ दिखा दिया।

- **एतदर्थमेव जनास्तं महामना इत्युपाधिना अभिधातुमारब्धवन्तः।**
  इसीलिए लोगों ने इनको 'महामना' की उपाधि से सम्बोधित करना प्रारम्भ कर दिया।
- **महामना विद्वान् वक्ता, धार्मिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत्।**
  महामना (मदनमोहन मालवीय) विद्वान् वक्ता धार्मिक नेता तथा निपुण पत्रकार थे,
- **परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत्।**
  परन्तु इनका सर्वोच्च गुण जनसेवा ही था।
- **यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान पीड्यमानांश्चापश्यत्**
  जहाँ कहीं भी ये लोगों को दुःखी तथा पीड़ित होता देखते
- **तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः, सर्वविधं साहाय्यञ्च अकरोत्।**
  वहाँ पर शीघ्र ही उपस्थित हो जाते थे तथा सब प्रकार की सहायता करते थे।
- **प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत्।**
  प्राणियों की सेवा हो इनका स्वभावा था।
- **अद्यास्माकं मध्येऽनुपस्थितोऽपि महामना मालवीयः स्वयशसोऽमूर्तरूपेण प्रकाशं वितरन्**
  आज हमारे मध्य अनुपस्थित होते हुए भी महामना मालवीय (ज्ञान का) अपने यश के अमूर्तरूप शरीर से प्रकाश बाँटते हुए
- **अन्धे तमसि निमग्नान्·जनान् सन्मार्ग दर्शयन् स्थाने-स्थाने, जने-जने उपस्थित एव।**
  गहन अंधकार मे डूबे हुए लोगों को अच्छा मार्ग दिखाते हुए स्थान-स्थान पर और जन-जन में उपस्थित है।
- **जयन्ति ते महाभागा जन-सेवा-परायणाः।**
  जनसेवा में तत्पर रहनेवाले महापुरुषों की जय हो,
- **जरामृत्युभयं नास्ति येषां कीर्तितनोः क्वचित।।**
  जिनके यशरूपी शरीर को कहीं भी वृद्धावस्था और मृत्यु का भय नहीं है।

www.gyansindhuclasses.com

www.gyansindhuclasses.com